B.Ed. 1st YEAR

Course No.- 02
Course Credit - 04

WOMEN'S TRAINING COLLEGE
PATNA UNIVERSITY, PATNA

CONTEMPORARY INDIA AND EDUCATION

HUMANISM AND EDUCATION

Presented By - **Mahadeo Kumar**
Guest Teacher
W.T.C, P.U

मानवतावाद का अर्थ

मानवतावाद पाश्चात्य दर्शन की वह विचारधारा है ***जो इस संसार को प्रकृति द्वारा निर्मित मानती और यह मानती है कि यह भौतिक जगत ही सत्य है, इसके अतिरिक्त कोई अत्यधिक जगत नहीं हैं।*** यह आत्मा-परमात्मा और स्वर्ग नर्क जैसे सम्प्रत्यों पर विचार न कर यह मानती है मानव जीवन का मूल उद्देश्य सुख एवं शान्ति पूरक जीना है, जिसे सबकी अच्छाई हेतु सोचने और कार्य करने से प्राप्त किया जा सकता हैं। विज्ञान को मानव मात्र हित में प्रयोग करने पर बल देते हैं। मानवतावाद के समर्थक विदेश में ***पायथागोरस, इरास्मोर, बकुनन हर्डर*** आदि है, वही भारत में ***राजाराम मोहन राय, टेगोर, गोपाल कृष्ण गोखले, अरविन्द घोष, गाँधी, नेहरु, डी.डी.यू*** इत्यादि में मानवतावादी विचार का चिंतन देखा जा सकता।

मानवतावाद की परिभाषा

- "मानव ही मानव चिन्तन का आधार है और ईश्वर जैसी कई शक्ति नहीं हैं और न ही कोई अतिमानवीय वास्तविकता है जिससे इस जोड़ा जा सके।"
- "Man makes up the entire framework of human thought, that there is no God, no super human reality to which he can be related or can relate himself" – ***Maslow***
- "पर सेवा, पर सहायता और पर हितार्थ कर्म करना ही पूजा है और यही हमारा धर्म है, यही हमारी इंसानियत है।" – ***पंडित जवाहर लाल नेहरू***

मानवतावाद के सिद्धांत

- इस संसार की कोई नियामक सत्ता नहीं हैं।
- यह भौतिक जगत सत्य हैं, इसके अतिरिक्त कोई अध्यात्मिक जगत नहीं हैं।
- ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं हैं।
- मनुष्य सृष्टि के विकास की चरम सीमा हैं।
- मनुष्य का विकास उसके स्वयं के ऊपर निर्भर करता हैं।
- मनुष्य जीवन का उद्देश्य सुखपूर्वक जीना है।
- सुखपूर्वक जीने के लिए भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक हैं।
- किसी भी प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानवीय मूल्यों का पालन आवश्यक हैं।
- राज्य का मुख्य कार्य व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा करना हैं।
- मानवतावाद का मूल आधार मानव हैं।

मानवतावाद व शिक्षा के उद्देश्य

- शारीरिक विकास
- बौद्धिक विकास
- सामाजिक विकास
- सांस्कृतिक विकास
- उच्च मानवीय मूल्यों का विकास
- उत्पादन क्षमता का विकास
- सृजनात्मक का विकास
- भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति पर बल

मानवतावाद व शिक्षा की पाठ्यचर्या

मानवतावादी अच्छे मनुष्य के निर्माण को बात करते हैं । इनकी दृष्टि से पाठ्यचर्या में स्वास्थ्य रक्षा एवं उसके विकास के लिए स्वास्थ्य विज्ञान एवं व्यायाम, खेल-कूद को तर्क शक्ति के विकास के लिए तर्क प्रधान विषयों एवं क्रियाओं को, सामाजिक भाषा, साहित्य, इतिहास, कला एवं अन्य मानवीय विषयों को, उच्च मानवीय मूल्यों के विकास के लिए समाज सेवा को, उत्पादन क्षमता के विकास के लिए कला-कौशल, विज्ञान एवं तकनीकी को और सृजनात्मकता के लिए सृजनात्मक क्रियाओं को स्थान देना चाहिए।

मानवतावाद व शिक्षा की पाठ्यचर्या

मानवतावादियों ने सर्वाधिक बल तर्क एवं विवेक पर दिया हैं। इनकी दृष्टि से प्रश्नोत्तर, वाद-विवाद, समस्या समाधान एवं तर्क सीखने-सीखाने की उत्तम विधियाँ हैं।

मानवतावाद व अनुशासन

मानवतावादी आत्मानुशासन के पक्षधर हैं। उनकी दृष्टि से अनुशासन का विकास अनुशासन द्वारा ही किया जा सकता है। यदि सीखने वाले अनुशासन का पालन करते हैं तो सीखने वाले अनायास ही अनुशासन का पालन करेंगे। इनकी दृष्टि से मूल सुधार दंड से नहीं, बल्कि प्रेम से होना चाहिए।

मानवतावाद व शिक्षक

मानवतावादियों की दृष्टि से शिक्षकों को पढाये-सिखाये जाने वाले विषयों और साथ ही अपने शिक्षार्थियों का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए | शिक्षक का दृष्टिकोण उदार होना चाहिए, उन्हें शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का अनादर नहीं करना चाहिए और उनके सम्पूर्ण विकास का उत्तरदायित्व वहां करना चाहिए | शिक्षक परिवर्तनशील होने चाहिए और समाज की पुनरचना में उनका विकास होना चाहिए |

मानवतावाद व विद्यालय

मानवतावादी विद्यालयों को मानव निर्माण की प्रयोगशाला मानते हैं | उनके अनुसार विद्यालयों में सबको एक दूसरे के साथ मानवीय व्यवहार करना चाहिए और सबको एक दूसरे की सुख सुविधा में सहयोग करना चाहिए |

मानवतावाद व शिक्षार्थी

मानवतावादी शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का आदर करते हैं अत: वे उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने एवं निर्णय लेने की स्वतंत्रता देने के पक्ष में हैं | शिक्षक शिक्षार्थी का सम्बन्ध ‘मानवीय मूल्यों’, प्रेम एवं सहयोग पर आधारित होने की बात करता हैं | ये शिक्षकों से अपेक्षा करते हैं कि वे अपने शिक्षार्थियों को किसी भी प्रकार के भय, द्वन्द और तनाव से मुक्त रखे |